ISSN 2278-8808
An International Peer Reviewed
SCHOLARLY RESEARCH JOURNAL
FOR INTERDISCIPLINARY STUDIES

अम्बिकादत्त व्यास कृत् 'शिवराज विजय' उपन्यास का साहित्यिक मूल्यांकन

बीरपाल सिंह, Ph. D.

विभागाध्यक्ष (संस्कृत), राजकीय महाविद्यालय गौण्डा, अलीगढ़

Abstract

शिवराजविजय को संस्कृत साहित्य का प्रथम उपन्यास माना जाता है। यह एक ऐतिहासिक उपन्यास है। इस इकाई के अन्तर्गत आपने श्री अम्बिकादत्त व्यास जी के जीवन से सम्बन्धित विभिन्न पक्षों के विषय में जानकारी प्राप्त की। व्यास जी कुशाग्र बुद्धि एवं विलक्षण प्रतिभासम्पन्न व्यक्ति थे। संस्कृत भाषा पर इनका पूर्ण अधिकार था। इनकी कुल ४० रचनायें प्राप्त होती हैं जिनमें शिवराजविजय का अत्यन्त महत्त्व है। अपनी प्रतिभा के परिणामस्वरूप अम्बिकादत्त व्यास जी ने 'घटिकाशतक' एवं 'शतावधान' की उपाधि प्राप्त की। शिवराजविजय एक ऐतिहासिक उपन्यास है। यह उपन्यास तीन विरामों में विभक्त है प्रत्येक विराम में 4-4 निःश्वास हैं। इस इकाई में आपने शिवराजविजय उपन्यास की कथावस्तु एवं उसकी घटना के विषय में सविस्तार अध्ययन किया। भाषा, भाव, रस, अलंकार, संवाद आदि पर यदि विचार करें तो वीर रस प्रधान इस उपन्यास की भाषा सरल एवं स्वाभाविक है। अपने भावों को अभिव्यक्त करने में एवं तात्कालिक सामाजिक स्थितियों को पाठकों के समक्ष प्रस्तुत करने में नितान्त सक्षम है। इस उपन्यास के नायक वीर शिवाजी हैं।

शब्दावलीः उच्छृंखलता, स्वच्छन्दता, निरंकुशता, अलंकार.योजना, अभिव्यंजना श्लाघनीय ।

अध्ययन उद्देश्यः

1. अम्बिकादत्त व्यास कृत् 'शिवराजविजय' उपन्यास की कथावस्तु से परिचय प्राप्त करना।
2. 'शिवराजविजय' उपन्यास की भाषा.शैली, अलंकार.योजना, रस योजना आदि से परिचित होना।
3. संस्कृत की पारिभाषिक शब्दावली तथा विशिष्ट प्रयोग विधि का ज्ञान प्राप्तकरना

विवेचना व निष्कर्षः आधुनिक काल में अम्बिकादत्त व्यास विरचित शिवराजविजय संस्कृत के प्रथम उपन्यास के रूप में प्रसिद्ध है। शिवराजविजय एक ऐतिहासिक उपन्यास है। यह उपन्यास तीन विरामों में विभक्त है तथा प्रत्येक विराम में चार.चार निःश्वास हैं। इस उपन्यास में भाषा, भाव,

अलंकार, रस आदि साहित्यिक तत्त्वों का सुन्दर प्रयोग किया गया है। वीर रस प्रधान इस उपन्यास के नायक वीर शिवाजी हैं। अम्बिकादत्त व्यास जी ने हिन्दी और संस्कृत में छोटी.बड़ी सब मिलाकर ४० पुस्तकों की रचना की। रत्नाष्टकम्, सामवतम् नाटक, कथाकुसुमम्, गद्यकाव्यमीमांसा, गुप्ताशुद्धिप्रदर्शनम्, धर्माधर्मकलकलम्, द्रव्यस्तोत्रम्, सहस्त्रनामरामायण, बालव्याकरण, मित्रालापः, शिवराजविजय आदि इनकी सस्कृत भाषा में प्रकाशित रचनाएं हैं । अवतारमीमासां, ईश्वरेच्छा, बिहारी.विहार, भारतसौभाग्य, ललितानाटिका, विभक्तिविलास आदि इनकी हिन्दी भाषा में प्रकाशित रचनाएं हैं।

'शिवराजविजय' अम्बिकादत्त व्यास जी की सर्वश्रेष्ठ साहित्यिक कृति है। सस्कृत गद्य.साहित्य में अम्बिकादत्त कृत 'शिवराजविजय' का अन्यतम स्थान है। बाण, दण्डी और सुबन्धु के बाद संस्कृत गद्य साहित्य की परम्परा पर यदि दृष्टि डालें तो और भी गद्यकारों के नाम प्राप्त होते हैं किन्तु बौद्धिक प्रतिभा, साहित्यिक उत्कृष्टता और सामाजिक परिदृश्यों के आकलन की विशिष्टता के परिणामस्वरूप व्यास जी का नाम प्रमुख गद्यकारों की श्रेणी में अंकित है।

काव्य का स्वरूप या तो गद्यमय होता है या पद्यमय अथवा गद्य.पद्य मिश्रित। काव्य के इन स्वरूपों में गद्य की प्रधानता है क्योंकि गद्य मनुष्य की प्रारम्भिक भाषा है। मनुष्य जब बोलना प्रारम्भ करता है तो सर्वप्रथम गद्य ही बोलता है। भावों को जितना स्पष्ट रूप से गद्य के माध्यम से व्यक्त किया जा सकता है उतना पद्य के माध्यम से नहीं। सभी प्रकार के गद्य को काव्य नहीं कहा जा सकता है क्योंकि गद्य में भी काव्य के समान प्रत्येक षब्द को कुछ न कुछ विशेष चमत्कार से युक्त होना चाहिए। इसीलिये गद्यकाव्य को कवियों की कसौटी कहा गया है – ' गद्यं कवीनां निकषं वदन्ति'।

१९वीं षती से पूर्व संस्कृत साहित्य में गद्यकाव्य के दो भेद प्रचलित थे – कथा औरआख्यायिका। आधुनिक काल में उपन्यास और कहानी के रूप में गद्य की दो नई विधाओं को साहित्य में स्थान मिला। इन विविध विधाओं में उपन्यास विधा पूर्व प्रचलित कथा नामक विधा से साम्य रखती है।

'शिवराजविजय' की रचना 1898 ई. में प्रारम्भ हुई, इसकी पूर्ति में 15 वर्ष का समय लगा। यह ग्रन्थ बंगला उपन्यास की धारा से प्रेरित है। व्यास जी ने अपनी इस रचना को स्वयं उपन्यास कहा है। शिवराजविजय तीन विरामों में विभाजित है। प्रत्येक विराम में चार.चार निःश्वास हैं। इसके नायक शिवाजी हैं तथा प्रतिनायक औरंगजेब है। इस ग्रन्थ में शिवाजी का चरित्र उदात्त रूप में वर्णित किया गया है। यह एक ऐतिहासिक उपन्यास है। वीर शिवाजी ने दक्षिण में यवनों के आधिपत्य तथा अत्याचारों से खिन्न होकर स्वतन्त्रता के लिये संघर्ष प्रारम्भ किया। उस समय दो.दो कोस पर आश्रम बनाए गए जिनके माध्यम सेयवनों की गतिविधि का परिचय प्राप्त होता था। शिवाजी की अनवरत विजय से उद्विग्न होकर बीजापुर के शासक ने उनसे युद्ध करने के लिए अफजल खान को भेजा। अफजल खान ने भी भीमा नदी के तट पर अपना शिविर लगाया। बीजापुर के शासक सन्धि का आश्रय लेकर वीर शिवाजी को जीवित पकड़ना चाहते थे किन्तु उनकी इस गुप्त योजना के विषय का शिवाजी ने पहले ही पता लगा लिया। एक यवन गुप्तचर बीजापुर से पत्र लेकर जा रहा था। रास्ते में उसने एक ब्राह्मण कन्या का अपहरण कर लिया किन्तु वह कन्या एक आश्रम के अध्यक्ष ब्रह्मचारी गुरु के शिष्यों गौरसिंह एवं श्यामसिंह द्वारा बचा ली गयी। गौरसिंह द्वारा वह यवन गुप्तचर मार डाला गया। गौरसिंह ने बीजापुर कावह गुप्त सन्देश पत्र प्राप्त किया। उस पत्र द्वारा बीजापुर की गुप्त दुरभिसन्धि को जानकर शिवाजी ने स्वयं अफजल खान को छलने की योजना बनाई। बीजापुर के दरबार से सन्धि प्रस्ताव लेकर भेजे गए पण्डित गोपनाथ ने प्रताप दुर्ग की तलहटी में अफजल खान से मिलने का शिवाजी का प्रबन्ध किया। गारै सिंह गायक का वेष ा धारण कर अफजल खान के शिविर में जाकर समस्त वृत्तान्त पता लगा लाया। शिवाजी ने अपनी सेना चारों ओर जंगलों में तथा अफजल खान के शिविर के आस.पास छिपा दी। अफजल खान प्रातः.काल शिवाजी से मिलने आया। शिवाजी अपने वस्त्र के अन्दर कवच तथा हाथों में बघनखा पहनकर गए। आलिंगन करने पर शिवाजी ने अफजल खान के कन्धों और गर्दन को फाड़कर उसे भूमि पर पटक दिया तथा शिवाजी की सेना ने यवनों की सेना को मारकर भगा दिया।

शिवराजविजय एक ऐतिहासिक उपन्यास है। व्यास जी ने इतिहास की घटनाओं को इस उपन्यास में अभिव्यक्त किया है। यह उपन्यास ऐतिहासिक होते हुए भी साहित्यिक सौन्दर्य से युक्त है। यद्यपि इस उपन्यास में दो कथाएं समानान्तर चल रही थीं जिसमें एक के नायक वीर शिवाजी हैं तो दूसरी के नायक रघुवीर सिंह हैं तथापि ये दोनों कथाएं पूर्ण स्वतन्त्र न होकर एक दूसरे की पूरक हैं। यह उपन्यास महाराष्ट्र शिरोमणि शिवाजी की 10 वर्षों की जीवनी पर आधारित है। इसका कथानक मातृभूमि के प्रति प्रेम राजा की प्रजावत्सलता, प्रजा की राजभक्तिपरायणता, धार्मिकता तथा राष्ट्रीय भावनाओं से ओत.प्रोत है। ऐतिहासिकता, देशभक्ति, राजभक्ति, मार्तृभूमिभक्ति आदि भावों का इस अनुपम कृति में सुन्दर समन्वय हुआ है। इन नवीन भावनाओं का प्राचीन संस्कृत साहित्य में नितान्त अभाव था।

व्यास जी ने ऐसे समय में शिवराजविजय लिखकर राष्ट्रीय प्रेम से परिपूर्ण महाराज शिवाजी का आदर्श हमारे सम्मुख रखा था, जब 1857 में प्रथम स्वाधीनता संग्राम की विफलता के बाद जनता में भय तथा आतंक व्याप्त था। उस समय शिवराजविजय ने अपने देशभक्तिपूर्ण कथानक के माध्यम से जनता में षंखनाद का कार्य किया है।

भाषा शैलीः

मनोगत भावों को अभिव्यक्त करने का प्रमुख साधन भाषा है। भावों को अभिव्यक्त करने के लिये भाषा पर अधिकार होना नितान्त आवश्यक है। बिना भाषा पर अधिकार किए कोई भी लेखक भावों की सफल अभिव्यक्ति करने में पूर्णतया सफल नहीं हो पाता।

भाषा की दृष्टि से शिवराजविजय अत्यन्त आकर्षक कृति है। इसमें संस्कृत भाषा का वास्तविक रूप प्रस्फुटित हुआ है। शिवराजविजय में उचित शब्दावलियों का प्रयोग, अर्थपूर्ण वाक्य विन्यास तथा अवसर के अनुकूल एक ओर दीर्घ समास बहुला पदावली का प्रयोग किया गया है तो दूसरी ओर सरल और लघु पदावली का प्रयोग किया गया है। इसमें ओज, प्रसाद और माधुर्य इन तीनों गुणों का समुचित समन्वय हुआ है। व्यास जी का भाषा पर पूर्ण अधिकार था। वे भावों के अनुकूल भाषा का संयोजन करने का सदैव ध्यान रखते थे। जिस प्रकार के कोमल या कठोर भावों का वर्णन करना होता था उसी के अनुरूप भाषा संयोजन करते थे।

शिवराजविजय में व्यास जी ने भाषा और शैली का प्रयोग भावों के अनुसार किया है। यां.तां व्याकरणिक षब्दों के प्रयोग व्यास जी की विद्वत्ता की ओर संकेत करते हैं।

अलंकार योजनाः अम्बिकादत्त व्यास जी ने अपनी रचना शिवराजविजय को एक कुशल रमणी के तुल्य अलंकारों से सजाया है। उन्होंने अलंकारों के प्रयोग में अपनी सूक्ष्म मर्मज्ञता का परिचय दिया है। स्थान.स्थान पर अलंकारों की छटा के दर्शन होते हैं किन्तु कवि ने अलंकारों का प्रयोग सर्वथा स्वाभाविक रूप में ही किया है।

उत्प्रेक्षा अलंकार कवि की कल्पना का बहुत बड़ा सम्बल है। बाणभट्ट के समान अम्बिकादत्त व्यास जी ने भी उत्प्रेक्षा अलंकार का सुन्दर प्रयोग किया है। अलंकारों में उपमा अलंकार का एक विशिष्ट स्थान है। उपमा एक प्रकार से वक्तव्य को कहने का ढंग है। अम्बिकादत्त व्यास जी ने परम्परागत उपमानों के साथ.साथ नवीन उपमानों को भी अपने काव्य में स्थान दिया है। अम्बिकादत्त व्यास जी का प्रिय अलंकार विरोधाभास है। विरोधाभास अलंकार के प्रयोग में व्यास जी बाण का अनुकरण करते हुए दिखाई पड़ते हैं। इस प्रकार अलंकारों के प्रयोग में अम्बिकादत्त व्यास जी ने अपनी सूक्ष्म मर्मज्ञता का परिचय दिया है। उनका गद्य अपने सहज सौन्दर्य से पाठकों के चित्त को आकर्षित करने वाला है।

रस योजनाः व्यास जी ने शिवराजविजय में सर्वाधिक आश्रय स्वाभाविकता को दिया है। परिणामतः उनकी कृति आदि से अन्त तक निर्बाध गति से रसास्वादन कराती है। शिवराजविजय का प्रधान रस वीर है। शिवराजविजय में शिवाजी के षौर्य का अद्भुत वर्णन किया गया है। व्यास जी ने युद्धादि के प्रसंग में वीर रस के साथ.साथ रौद्र, भयानक, वीभत्स तथा अद्भुत रस का प्रयोग भी किया है। उनका श्रृंगार मादकता और उच्छृंखलता से रहितहै। उन्होंने श्रृंगार का वर्णन अत्यन्त शिष्ट और सात्विक रूप में किया है। इस प्रकार यह कहा जा सकता है कि शिवराजविजय में नौ रसों का प्रयोग बड़ी चारुता और दक्षता से किया गया है।

संवाद योजनाः सजीव, रोचक और स्वाभाविक एवं सरल भाषा में संवाद विधान उपन्यास के कथानक का प्राण हुआ करता है। शिवराजविजय में संवादों की हृदयग्राहिता का यही रहस्य है। व्यास जी ने संवादों के

अनावश्यक विस्तार का सर्वथा परित्याग किया है। संवादों की भाषा इतनी चुस्त और मुहावरेदार है कि वह विषय को अत्यन्त आकर्षक बना देती है।

सामाजिक चित्रणः

शिवराजविजय एक ऐसा उपन्यास है जिसमें तत्कालीन सामाजिक परिस्थितियों और चरित्रों का समग्र रूप से वर्णन किया गया है। अम्बिकादत्त व्यास जी ने शिवराजविजय में मुगलकालीन समाज का सुन्दर चित्रिण किया है। उस समय राजा विलासी और द्वेषभाव से युक्त थे। हिन्दू जाति मुसलमानों के अत्याचार से पीड़ित थी। मुसलमानों का साम्राज्य भारत में निरन्तर बढता जा रहा था। हिन्दू कन्याओं का अपहरण, मन्दिरों और मूर्तियों का विध्वंस, पवित्र धर्मग्रन्थों के विनाश को वे अपना कर्तव्य मानते थे।

संदर्भः

संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास – डॉ. कपिलदेव द्विवेदी, रामनारायणलाल विजयकुमार, 2 कटरा रोड, इलाहाबाद – 211002

संस्कृत साहित्य का इतिहास – डॉ. उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', चौखम्बा भारती अकादमी, वाराणसी।

संस्कृत साहित्य का समग्र इतिहास – राधावल्लभ त्रिपाठी, न्यू भारती बुक कार्पोरेशन, दरियागंज, नई दिल्ली।

शिवराजविजय – डॉ. रमाशंकर मिश्र, चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन, वाराणसी।